Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Raj Nagar

BA Part III (H)

Paper V

Lecture IV

नातेदारी (परिभाषा) →

रॉबिन फॉक्स के अनुसार, " नातेदारी केवल मात्र स्वजन अर्थात वास्तविक अथवा कल्पित समरक्तता वाले व्यक्तियों के मध्य सम्बंध है।"

लेवी स्ट्रास के अनुसार " नातेदारी प्रणाली वंश अथवा रक्त सम्बन्धों के विषयक सूत्रों निर्मित नहीं होती है जो व्यक्ति को मिलती है, यह मानव चेतना में विद्यमान रहती है, यह विचारों की निरंकुश प्रणाली है वास्तविक परिस्थिति का स्वतः विकास नहीं है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट है कि नातेदारी में उन व्यक्तियों को सम्मिलित करते है जिनसे सम्बंध वंशावली के आधार पर होते है और वंशावली सम्बन्ध परिवार से पैदा होते है ए१ -

परिवार पर ही निर्भर है। ऐसे सम्बंधों को समाज की स्वीकृति आवश्यक है। अभी कभी प्राणीशास्त्रीय रूप से सम्बंध न होने पर भी उन सम्बन्धों को समाज ने स्वीकार लिया है तो वे नातेदार माने जाते है।

नातेदारी व्यवस्था के आधार =>

1) रक्त सम्बन्ध एवं विवाह सम्बन्ध इसके आधार होते है।
2) गोद लिए गये संतान भी इसके निर्माण के आधार हो सकते है।
3) नातेदारी सम्बन्ध सामाजिक मान्यताओं से सम्बन्धित है।
4) नातेदारी व्यवस्था की प्रकृति सभी समाजों में अलग-अलग हो सकती है।

अतः कहा जा सकता है कि नातेदारी व्यवस्था रक्त सम्बन्धों, विवाह सम्बंधों और सामाजिक मान्यताओं पर टिकी हुई व्यवस्था है।